दीया और बाती

प्रेम हमारा निराला है,
याद है कहा था तुमने यही
तो फिर क्यूँ न
अपना जीवन सफल बनायें हम
बन जायें जीवन के दीया और बाती

स्त्री

तुम पढ़ते हो मुझे सिर्फ़
शायरी और शे'अरों में
तुम गढ़ते हो मुझे सिर्फ़
फेसबुक के स्लोगन में
सुना तुमने सिर्फ़
समाज के ठेकेदारों को
और कुछ निकृष्ट सोच और बातें
लिखा देखा सिर्फ़
अख़बारों का सच
कभी जो पढ़ लेते तुम मुझे तो
शायद आज मैं स्त्री होती

वृक्ष और स्त्री

है शक्ति मुझमें
जीवन बीज को भीतर रखना
परतें तोड़ अन्याय की
अंकुरित कर स्वयं बढ़ना
पौरुष पत्थरों से हो आहत
मनचले पवनों से कर डिठोली
जड़ से धरा को गहे रखना

बलात्कार के बाद – प्रेम

बिन तेरे नैराश्य आँखों में
खोने से तुझे डरता मन
जानती हूँ जाओगे छोड़
रह जायेगा दुसह्य जीवन
रह रह कर चुभती है
तुमसे अलग चोटिल काया
दे रही हूँ आमंत्रण बनो साया
स्तब्ध प्रकृति और जन
देखते मेरा अथाह मौन रुदन

बलात्कार के बाद – स्त्री

अभी तो हूँ किसलय,
ओस बूँद मेरे पास है
अभी तो इंद्राधनुषी रंग औ
प्रथम प्रणय प्यास है
अभी बनने तरुणी को पुकारो मुझे
अभी मत मारो मुझे